Unit - I B

Needs Of Home Science Teaching - गृह विज्ञान शिक्षण की आवश्यकता एवं महत्व -

गृह विज्ञान शिक्षण के महत्व को निम्न प्रकार समझा जा सकता है। -

1- गृह विज्ञान छात्राओं को सफाई, स्वास्थ्य, पोषण, गृह परिचर्या शिशु-कल्याण आदि का वैज्ञानिक ज्ञान प्रदान करता है। इससे उनके उपयोगी ज्ञान में वृद्धि होती है। तथा वे अपने उत्तरदायित्वों को भली-भाँति पूरा कर सकती है।

II- गृह विज्ञान की शिक्षा द्वारा गृहिणी को मितव्ययिता की शिक्षा मिलती है। पोषण-विज्ञान के अभाव में जिन खाद्य वस्तुओं के कुछ भाग को अनुपयोगी एवं व्यर्थ समझा जाता है। अब उनका उपयोग करके घर की बचत की जा सकती है। सब्जी व फलों को छीलकर उनके छिलके फेकना, आटे का चोकर फेकना, सब्जी तथा चावल के पानी को फेकना आदि अपव्ययी क्रियाओं को कोई भी गृह-विज्ञान की छात्रा सहन नहीं कर सकती। वह इनका उपयोग पोषण आहार तैयार करने में करती है।

3- नारी के लिए गृह-विज्ञान का व्यवहारिक महत्व भी है। विषय का पर्याप्त ज्ञान करने के पश्चात वे विभिन्न प्रकार के व्यवसाय अपना सकती है। उदाहरण के लिए प्रारम्भिक चिकित्सा निर्देशिका, परिवार नियोजन, ग्राम सेविका, गृह विज्ञान शिक्षिका पोषण विशेषज्ञ और शोध कार्यकर्ता आदि कार्यों को भली-भाँति कर सकती है।

4- छात्राओं में आदर्श गृहिणी के गुणों का समावेश करने की दृष्टि से यह विषय नितान्त आवश्यक है। आज स्त्री का कार्यक्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है। उसे गृह के अतिरिक्त अनेक सामाजिक कार्य करने पड़ रहे हैं। परन्तु यदि वह गृह के कार्यों की उपेक्षा करने लगे तो समाज विश्रृंखल एवं निर्बल होता जायेगा। बहुधा लोगों को कहते हुए सुना जाता है कि पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ गृह के कार्यों की उपेक्षा व घृणा की दृष्टि से देखती है। परन्तु यदि छात्राओं को प्रारम्भ से गृह विज्ञान का व्यवहारिक व सैद्धान्तिक ज्ञान दिया जाय तो वे

इन कार्यों में को रुचि व लगन के साथ करने लगती है।

5- प्रत्येक राष्ट्र अपेक्षा करता है कि उसके नागरिक स्वस्थ व उत्कृट मूल्यों एवं आदर्शों के प्रति श्रद्धा और विश्वास के भाव निर्मित करे। बालकों के समुचित विकास के लि स्वस्थ्य पारिवारिक सम्बन्ध एवं प्रेम और विश्वासपूर्ण पारस्परिक सम्बन्ध नितान्त आवश्यक है। उसमें राष्ट्र के प्रति सम्मान और श्रद्धा के भाव हो। गृह विज्ञान शिक्षण के माध्यम से उक्त सभी गुणों का समावेश प्रारम्भ से ही छात्राओं में किया जा सकता है।

6- स्त्री भावी पीढ़ी की निर्माती होती है। शिशु के पालन-पोषण का उत्तरदायित्व उन्हीं का होता है। शुरु में बालक का विकास जिस प्रकार होगा वही प्राय: उसके भावी विकास के क्रम का निर्धारण करता है। गृहिणी को शिशु पालन और शिशु कल्याण से सम्बन्धित सैद्धान्तिक और व्यवहारिक बातों से भली-भाँती अवगत होना चाहिए। गृह विज्ञान विषय के अन्तर्गत इसके सम्बन्ध में पर्याप्त ज्ञान प्रदान किया जाता है।

7- सौन्दर्यात्मक प्रवृत्ति के विकास की दृष्टि से भी गृह विज्ञान का अत्यधिक महत्व है। छात्राओं को प्रारम्भ से ही सुन्दर ढंग से विभिन्न प्रकार के आहार तैयार करने तथा परोसने का ज्ञान प्रदान किया जाता है। इसके अलावा विभिन्न प्रकार की सिलाई, कढ़ाई बुनाई का भी ज्ञान प्रदान किया जाता है। घर को सजाने, रसोईघर की सुव्यवस्था आदि वाले घर में सौन्दर्यात्मक वातावरण का निर्माण करती है।

8- छात्रायें दूत और अन्य साधारण बिमारियों के सम्बन्ध में पर्याप्त जानकारी प्राप्त कर लेती है। घर में जलने कटने छिलने की दुर्घटना होने पर क्या प्राथमिक चिकित्सा करनी चाहिए इसका ज्ञान छात्राओं को गृह विज्ञान में प्रदान किया जाता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, वाराणसी

Relevance and Correlation of Home Science and other Subjects – गृह विज्ञान का अन्य विषयों के साथ सहसम्बन्ध –

गृह विज्ञान विषय प्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति के दैनिक जीवन से सम्बन्धित है। इस विषय के पाठ्यक्रम के अन्य विषयों से घनिष्ठ सम्बन्ध है। गृह विज्ञान शिक्षण में ऐसे अनेक अवसर प्राप्त होते हैं जब गृह विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में आपस में तथा गृह-विज्ञान और पाठ्यक्रम के अन्य विषयों के साथ सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है। एक ओर गृह-विज्ञान - भाषा, भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र, नागरिकशास्त्र तथा चित्रकला आदि से सम्बन्धित है तो दूसरी ओर— भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, प्राणिशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र तथा गणित आदि से सम्बन्धित है।

~~इसके शिक्षण~~ गृह विज्ञान इतना व्यापक विषय है कि इसके शिक्षण के लक्ष्य की प्राप्ति करने हेतु अन्य विषयों से सहसम्बन्ध स्थापित करना आवश्यक है। गृह विज्ञान का अन्य विषयों से सहसम्बन्ध का वर्णन निम्न प्रकार है—

गृह विज्ञान और सामान्य विज्ञान – गृह विज्ञान 'कला' व 'विज्ञान' दोनों ही है। इस प्रकार इसका एक ओर तो विभिन्न कलाओं में और दूसरी ओर विभिन्न वैज्ञानिक शास्त्रों से घनिष्ठ सम्बन्ध है। यदि सामान्य विज्ञान शुद्ध विज्ञान है तो गृह विज्ञान मुख्य रूप से एक व्यवहारिक विज्ञान है। गृह विज्ञान में उन वैज्ञानिक नियमों व सिद्धान्तों तथा वैज्ञानिक अविष्कारों का अध्ययन किया जाता है जो गृह सम्बन्धी होते हैं। बिजली की वस्तुओं का प्रयोग, गैस या मिट्टी के तेल के प्रयोग में आने वाले उपकरण, गृह कार्यों को करने वाली मशीनें घरेलू हानिकारक वस्तुओं को मारने वाली दवाइयाँ आदि विज्ञान की ही गृह विज्ञान की देन है।

वर्तमान युग में एक ओर तो विज्ञान ने मानवीय आवश्यकताओं को बढ़ा दिया है और दूसरी ओर उनकी पूर्ति के साधन बनाये हैं। इन साधनों का उपयोग वही देश या गृह कर सकता है जिसकी आर्थिक स्थिति अच्छी हो। भारत में जहाँ कुछ लोगों को छोड़कर

सबकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। इसी कारण इन वैज्ञानिक आविष्कारों का लाभ उठाना कठिन प्रतीत होता है भारत में अधिकांश स्थानों पर या तो बिजली उपलब्ध ही नहीं है या बहुत महँगी है, इस कारण सभी व्यक्ति रोशनी तथा अन्य कार्यों के लिए बिजली का उपयोग नहीं कर सकते। बिजली के चूल्हे, स्टोव, रेफ्रीजरेटर, पंखा रेडियो, कपड़े धोने की मशीन तथा बर्तन धोने की मशीन आदि का उपयोग होते हुए भी सबको अनुपयुक्त आर्थिक स्थिति के कारण उपलब्ध नहीं है।

गृह विज्ञान तथा विज्ञान एक दूसरे रूप में भी सम्बन्ध स्थापित होता है। जब कपड़े धोने के लिए पानी की कठोरता को दूर करना होता है तब रसायन शास्त्र का सहारा लेते हैं और सोडा आदि डालकर उसको कोमल बनाते हैं। इसी प्रकार घर में कोई संक्रामक रोग होजाने से रोगी या वस्तुओं को कीटनाशक दवाइयों से धोते हैं। यदि भोजन पकाने के साथ दाताओं को भोजन का वैज्ञानिक ज्ञान न दिया जाय तो पाक-शास्त्र तो अधूरा ही रह जाता है। भोजन के विभिन्न तत्व उनका संगठन क्रिया और शरीर को उनकी आवश्यकता आदि का ज्ञान उतना ही जरूरी है जितना कि खाने योग्य स्वादिष्ट भोज्य-वस्तुओं का पकाना। परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य एवं शुद्ध स्वच्छ और उचित भोजन पर निर्भर करता है। अतः गृहिणी को भोजन का वैज्ञानिक ज्ञान होना ~~चाहिए~~ अनिवार्य है। यहां गृहविज्ञान का विज्ञान से सह सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। प्रत्येक व्यक्ति के शरीर की कैलोरी आवश्यकता विज्ञान की सहायता से ही निर्धारित की जाती है। तथा उस आवश्यकता की पूर्ति किस प्रकार हो कौन-सा भोजन उचित और संतुलित है तथा खाना बनाने की कौन सी विधियां किन विशेष भोज्य पदार्थों उचित या अनुचित यह विज्ञान के आधार पर निश्चित किया जाता है।

शरीर विज्ञान और स्वास्थ्य विज्ञान का अध्ययन सामान्य विज्ञान की मदद के बिना सम्भव नहीं है। यह दोनों ही समान्य-विज्ञान का अंग मच्छर तथा अन्य घरेलू हानिकारक जन्तुओं की जीवनी और बचाव के साधन विज्ञान से ही प्राप्त होते हैं विभिन्न कीटाणुओं का ज्ञान भी विज्ञान से होता है और विज्ञान ही ~~उनके~~ नाश करने के उपाय बताता है।

गृह-विज्ञान और अर्थशास्त्र :- गृह विज्ञान को गृह अर्थशास्त्र कहा जाता है वास्तव में गृह विज्ञान में अर्थ शास्त्र का बहुत अं

अंश सम्मिलित होता है। गृहव्यवस्था का शिक्षण गृहो की विभिन्न आर्थिक परिस्थितियो को दृष्टि मे रखे बिना सही रुप से नही किया जा सकता। हर गृह-कार्य की विधि और गृह जीवन का स्तर आर्थिक और ~~सामाजिक~~ समाजिक परीस्थिति पर निर्भर करता है।

जिन घरो मे गृहिणियां आय से अधिक व्यय करती हैं, वहां अशान्ती, असंतोष तथा अतृप्ति रहती है। इसलिए छात्राओं मे अच्छी गृह व्यवस्था की क्षमता उत्पन्न करने के लिए उनको आय-व्यय पत्रक बनाना सिखाया जाना चाहिए। इसको सिखाने के लिए अर्थशास्त्र की सहायता की आवश्यकता पड़ती है। इसी के परिणाम स्वरुप गृहविज्ञान का अर्थशास्त्र से सह सम्बन्ध स्थापित हो जाता है।

गृह व्यवस्था मे अध्यापिका को छात्राओं को स्थान स्थान पर आर्थिक परीस्थिति का महत्व दिखाते हुए उनके अनुरुप प्रत्येक गृह-कार्य करने हेतु प्रेरित करना चाहिए जैसे कपड़े धोने की मशीन, बर्तन धोने की मशीन मशीन आदि का महत्व और उपयोगिता इसी के लिए है, जो उनको असानी से खरीद सकता है, रेडियो, ग्रामोफोन, रेडियो ग्राम-रैफ्रिजरेटर, टेप-रिकार्डर, एअरकंडिशनर, कूलर, कैमरा, टेलीविजन, मोटर आदि वस्तुएं अत्याधिक जीवन उपयोगी है। इनके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के चुल्हे, ओवन, कैन्टल, टोस्टर आदि जो स्मार्ट गृह मे विशेष रुप से प्रयोग आते है। भारत जैसे देश में ये कुछ ही लोगो को उपलब्ध है इस लिए गृह विज्ञान अध्यापिका को छात्राओं को कक्षा मे इन वस्तुओं का प्रयोग ~~सिखा~~ सिखाते हुए यह प्रभाव डालना चाहिए कि ये वस्तुए सुख और ऐश्वर्य के लिए है। इनको खरीदने के लिए वही ~~गृह~~ गृहिणियां व्यय करे, जो गृहसम्बन्धी अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करके कुछ धन की बचत करने मे सक्षम हो।

अर्थशास्त्र के नियमों और सिद्धान्तो की मदद से अध्यापिका छात्राओं को यह ज्ञान दे कि जब कोई नई खाद्य वस्तु बाजार मे आती हैं और सस्ती होती है। उस समय इकट्ठी खरीद लेने से आर्थिक लाभ होता है। गेहूँ, चावल, दाल, चीनी सही समय पर खरीद लेने पर सही विधि से संग्रह कर लेने पर धन की बचत के साथ-साथ श्रम की भी बचत होती है, जो लोग मसाले आदि को एकसाथ खरीद लेते हैं उनको बहुत सुविधा मिल जाती है।

घर की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए तथा एक निश्चित आय में गृह स्तर को ऊँचा उठाने के लिए गृहविज्ञान अध्यापिका जब पढ़ाती है तब उसके लिए यह आवश्यक है कि वह अपने विषय को अर्थशास्त्र से सम्बन्धित करें। घर के अनेक कार्यों को स्वयं करना, कपड़ो को धोना, खाना पकाना, सिलाई आदि करना, शिल्पकारी करना आदि गृह की आर्थिक स्थिति मे मदद करते है। इस आर्थिक स्थिति स्थिति की उन्नति और अवनति को समझने के लिए अर्थशास्त्र अच्छा

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल ...

साधन है। अतएव गृहविज्ञान और अर्थशास्त्र में अत्यधिक घनिष्ठ सम्बन्ध है।

गृह विज्ञान और गणित :- सिलाई के लिए माप लेते और नक्शा खींचते समय अनुपात आदि निकालने में, भोजन पकाते समय सामग्री की नापतौल करने में आय व्यय का हिसाब बनाने में वस्त्रों व अन्य गृहोपयोगी वस्त्र आदि के सीने में, संतुलित भोजन की सूची बनाने में तथा भोजन का मूल्य आंकने में गणित के ज्ञान की सहायता आवश्यक है। गृह विज्ञान गणित के प्रयोग के लिए व्यवहारिक क्षेत्र प्रदान करता है।

साधारण स्त्री के गणित का कम से कम प्रारम्भिक ज्ञान हो जाने से गृह कार्यों में बड़ी सहायता मिलती है। गृह विज्ञान के शिक्षण में छात्राओं को गृह सम्बन्धी आय व्यय का हिसाब, खरीदारी का हिसाब, धोबी का हिसाब, नौकर का हिसाब आदि विधिवत रूप से सिखाना चाहिए। सही गृहविज्ञान शिक्षण में स्थान-स्थान पर गणित से सम्बन्ध स्थापित किया जाता है। सिलाई के समान बुनाई के बार-बार फन्दे गिनने, घटाने और बढ़ाने, नमूने बनाने तथा उचित नाप का वस्त्र बनाने में गणित का अत्यधिक महत्व है। गृह परिचर्या में रोगी की रोजाना की दशा का तथा तापक्रम का चार्ट बनाने में गणित का ज्ञान अनिवार्य है। इसलिए गृहविज्ञान अध्यापिकाओं को गृहविज्ञान शिक्षण में यथा सम्भव इनका गणित से सम्बन्ध स्थापित करते जाना चाहिए।

पाक-शास्त्र में गणित का बहुत महत्व है। भोज्य वस्तुओं के उत्तम परिणाम हेतु दी गई विधि के व सामग्री के अनुपात या नाप तौल का बहुत ही सूक्ष्म रूप से अनुसरण करना आवश्यक है। भोज्य पदार्थ के परिणाम की शुद्धता सही माप तोल में ली गई सामग्री तथा शुद्ध विधि के प्रयोग पर निर्भर करती है। इसलिए गृह विज्ञान अध्यापिका को अपने शिक्षण में यथा योग्य गणित सम्बन्धी हिसाब तथा अन्य कार्यों को सर्वथा शुद्धता के साथ करना चाहिए। ऐसा करने से छात्राओं की विचार शक्ति और सूक्ष्म दृष्टि में वृद्धि होगी उनमें सजग होकर कार्य करने की आदत बढ़ेगी।

गृह विज्ञान और भूगोल :- व्यक्ति की मौलिक आवश्यकताएं — भोजन, गृह तथा वस्त्र होती हैं। गृह विज्ञान में इन तीनों आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, ज्ञान प्रदान किया जाता है। परन्तु व्यक्ति किस प्रकार का भोजन करते हैं, घर किस प्रकार का है तथा वस्त्र कैसे पहनते हैं। इन बातों का निर्धारण भौगोलिक परिस्थितियां करती है। इसी कारण भूगोल तथा गृहविज्ञान के

बीच स्वाभाविक सम्बन्ध का उपयोग शिक्षण करते समय अवश्य ही करना चाहिए

भारत मे प्रायः सूती वस्त्र ही धारण किये जाते है। वस्त्रो की सिलाई, कढ़ाई, बुनाई आदि का प्रदान करते समय उन भौगोलिक परिस्थितियो का उल्लेख भी करना जरूरी है जिनसे प्रभावित होकर भारत मे सूती वस्त्र प्रयुक्त किए जाते है। सूती वस्त्र तैयार करने के लिए कौन सी भौगोलिक परिस्थितियाँ उपयुक्त होती है तथा देश मे यह कहा पायी जाती है? रेशमी तथा ऊनी वस्त्र कहा अधिकता से पहने जाते है। और क्यों? ये कैसे तैयार किए जाते है? यह समस्त ज्ञान भूगोल की सहायता से दी जा सकती है। पाक शास्त्र मे विभिन्न प्रकार के भोज्य पदार्थ तैयार करने की शिक्षा दी जाती है। इनमे कुछ ऐसे पदार्थ भी है जो विदेशो से ग्रहण किए गये है। छात्राओं को भूगोल के द्वारा यह स्पष्ट करना चाहिए कि – भोजन सम्बन्धी भिन्नता क्यों है? भोज्य पदार्थ जिस रूप में भारत मे उपयोग मे लाए जाते है, उसी रूप में अधिक ठण्डे देशो में क्यो नही प्रयुक्त किया जाता? भोजन सम्बन्धी भौतिक भिन्नता का कारण भौगोलिक परिस्थितियों के स्पष्टीकरण द्वारा बताया जा सकता है। आज एक देश दूसरे देश के खान पान को अपनाने का प्रयत्न कर रहा है। भारतीय भोजन में विभिन्न प्रकार के पुडिंग, केक, पेस्ट्री, जैम, जैली आदि विदेशी भोज्य पदार्थों को ग्रहण करने लगे है। विदेशों मे भारत की अनेक भोज्य वस्तुएं जैसे – विलायत मे दही, अचार, मुरब्बा आदि प्रचलित हो रही है। यही पाक शास्त्र के क्षेत्र में भौगोलिक आदान प्रदान है।

गृह व्यवस्था मे मकान की बनावट के सम्बन्ध मे उपयुक्त स्थान का चयन, भवन निर्माण के लिए कच्चे माल (ईट, पत्थर, चूना सीमेन्ट का चयन), नींव की गहराई, कुर्सी की ऊंचाई, खीड़की, रोशनदान व दरवाजे की दिशा तथा ऊंचाई आदि के विषय में स्वास्थ्य रक्षा की दृष्टि से ज्ञान प्रदान किया जाता है। यहां भूगोल के ज्ञान का भली प्रकार उपयोग करना चाहिए। मिट्टी की बनावट, नमी, वायु, दबाव, सूर्य की दिशा मौसम आदि के विषय मे ज्ञान प्रदान किया जाता है। गृह व्यवस्था मे विभिन्न प्रकार के लकड़ी के फर्नीचर के बारे मे जानकारी देते समय भाँति-भाँति की लकड़ी तथा उनके उत्पत्ति के स्थानो का भी उल्लेख किया जा सकता है। गृह सजावट व सफाई का ज्ञान देते समय छात्राओं को भौगोलिक स्थिति के अनुरूप वहां की विभिन्न शैलियो का उल्लेख किया जाए। पाश्चात्य और पूर्वी देशो में गृह सजावट की विभिन्न विधियों की उपयोगिता का कारण है। वहां की विभिन्न जलवायु, रहन, सहन, वनस्पति तथा आर्थिक स्थिति। इस प्रकार छात्राओं को स्पष्ट किया जा सकता है कि भौगोलिक परिस्थितियां

किस प्रकार गृह सम्बन्धी आवश्यकताओं को प्रभावित करती है।
गृह विज्ञान शिक्षण में अनेक ऐसी वस्तुएं तथा उपकरण प्रयोग मे आते है। जो अधिकांशतः विदेशो द्वारा निर्मित है। गृहउपयोगी नये उपकरण जिनका उपयोग श्रम व समय की बचत करता है। इन उपकरणों के विषय में बताते समय या उनका प्रयोग सिखाते समय शिक्षिका को छात्राओं को उनसे सम्बन्धित देशो का बोध करा देना चाहिए।

घरेलू हानिकारक जीव-जन्तु (मक्खी, मच्छर, मकड़ी, खटमल दीमक, पिस्सू, छिपकली आदि) के विषय में बताते समय शिक्षिका को उन देशो का भी ज्ञान देना चाहिए। उनकी उत्पत्ति वहां विशेष नम जलवायु के कारण अधिकता से होती है। छात्राओ को इनकी उत्पत्ति मे सहायक परिस्थितियो को बताने हेतु तराई क्षेत्र मे स्थित नगरो का ज्ञान अवश्य कराना चाहिए।

शरीर-विज्ञान और स्वास्थ्य-विज्ञान अध्यापिका को छात्राओं को यह अवश्य बताना चाहिए कि शरीर के विभिन्न अंगो और उनकी क्रियाओ का ज्ञान किसने प्राप्त किया। विभिन्न बिमारियों के स्वरूप और उसके उपचार का अनुसंधान किस देश के निवासियो ने किया। जैसे लुई पाश्चर ने किस प्रकार पागल कुत्तों के काटने से उत्पन्न पागलपन के निवारण के लिए टीके का प्रचलन किया, किस प्रकार मैडम क्युरी ने कैंसर जैसे भयानक बिमारी का इलाज रेडियम के आविष्कार से किया, पेन्सीलीन, क्लोरो माइसीटीन, टेरामाइसीन, ओरोमाइसीन आदि का आविष्कार किन व्यक्तियों ने किन विशेष बिमारियो के उपचार के लिए किया। इन सबका वर्णन गृहविज्ञान शिक्षण मे भूगोल के महत्व को बढ़ाता है।

गृह विज्ञान और इतिहास — गृहविज्ञान पाठ्यक्रम से सम्बन्धित इतिहास को जब पृष्ठभूमि मे रखकर पढ़ाया जाता है। तब वह अत्यन्त रोचक और उपयोगी हो जाता है। बालिका को सिलाई व कढाई सिखाते समय भिन्न-२ प्रान्तो में प्राचीन काल मे प्रचलित वस्त्रो के फैशन, कढ़ाई के नमूने और उनको बनाने की विधियो को जब कक्षा मे बताया जाता है तब वे अति प्रसन्न होती है। फैशन के इतिहास के चक्र निरंतर चलता है जो आज नया है। कल पुराना हो जाएगा और पुराना फैशन फिर से नया हो जाता है।

इस प्रकार पाक-शास्त्र, गृह व्यवस्था, शिशु-पालन

अध्यापिका छात्राओं को इन विषयों का ज्ञान उसके इतिहास को दृष्टि में रखकर नहीं देती है। हर प्रदेश तथा देश का रहन सहन तथा खान पान भिन्न प्रकार का होता है। और समय-समय पर इनमे परिस्थिति अनुकुल परिवर्तन भी होता जाता है। इसी प्रकार भोजन बनाने व परोसने की विधियो मे भी समयानुकुल परिवर्तन होता रहा है। इसी प्रकार भोजन भी आज विभिन्न भोज्य पदार्थों मे तैयार किए जाने लगा है। जबकि प्राचीन काल मे हर प्रान्त मे कुछ विशेष भोज्य वस्तुएँ होती थी जिनका लोग नित्य प्रति सेवन करते थे। उत्तर प्रदेश मे कच्चा-पक्का भोजन, मुसलमान का सामिष भोजन, बंगाल व बिहार के चावल, तेल, मिर्च, मसालों का अधिकता से प्रयोग, पंजाब मे तन्दुरी रोटी और सरसो का साग तथा दही की लस्सी या मट्ठा, तथा मद्रास मे चावल इडली, डोसा, सांभर, उपमा आदि भोज्य वस्तुएँ थी। परन्तु अब स्थान-२ पर होटल और भोजनालय होने से अन्तर्प्रान्तीय और अन्तर्राष्ट्रीय भोज्य वस्तुएं हर जगह प्राप्त होती है। और उनका प्रचलन घरो मे भी बढ गया है। विद्यालय में छात्राओं को भी पाक शास्त्र के प्रति उनकी रुचि बढाने हेतु हर प्रकार का भोजन का अभ्यास कराया जाना चाहिए। इसलिए गृहविज्ञान के हर विषय का शिक्षण अब ऐतिहासिक दृष्टिकोण से किया जाता है। तो छात्राओ के वह अधिक मनोरंजक प्रतीत होता है तथा ज्ञान भी स्वभाविक रूप से प्राप्त रखा जाना होता है।

शरीर विज्ञान व स्वास्थ्य विज्ञान के उत्तम शिक्षण मे भी इतिहास को पृष्ठभूमि मे अवश्य रखा जाना चाहिए। शरीर के विभिन्न अंगो और उसकी क्रियाओं के ज्ञान कोष मे समय-समय पर जो परिवर्तन हुए तथा इन क्षेत्रो मे जो अनुसंधान हुए वे उन्हे इतिहास से ही मालूम होते है। विभिन्न बिमारियों के कारण और उपचार का ज्ञान देते समय यदि छात्राओं को उनके प्रति प्रचलित प्राचीन विचारों का भी वर्णन किया जाये तब उन बिमारियों पर किये गये अनुसंधानों का महत्व बढ जाता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया
20-08-2020